

MUNI INTERNATIONALSCHOOL

स्वयं की खोज स्वयं के द्वारा, स्वयं में (भें कौन हूँ?)

MUNI RESEARCH & DEVELOPMENT DIVISION

आप बनने में, मैं खो गया | वो बनने में, मैं खो गया | सितारा और तारा बनने में, मैं खो गया | सत्ता और गरीब अमीर बनने में, मैं खो गया |

आज तक में ढूंढ रहा हूँ में हूँ कहाँ ?

में कौन हूँ ?

में शरीर और जीवन का संयुक्त रूप हूँ तथा दोनों के पोषण, संरक्षण संचालन और क्रिया - कलापों का जिम्मेदार हूँ मैं मानव के रूप मे व्यवस्थित होने के लिए प्रयासरत हूँ | और जीवन ही सिर्फ परिस्थिति व शरीर के कार्य परिणाम का जिम्मेदार है।

शिक्षा का उद्देश्य



शिक्षाः जीने के लिए ज्ञान।

ज्ञान : जिससे जीवन उत्सव

पूर्वक जिया जा सके।

में शिक्षित होकर

- 1- स्वस्थ्य रह सकूं।
- 2- समृधि पूर्वक जी सकूं।
- 3- संबंधों में तृप्ति पा सकूं।
- 4- व्यवस्था में भागीदार हों सकूं।

शिक्षित व्यक्ति पर सवार तीन भूत।

- 1- लाभोन्मादी अर्थशास्त्र (पैसा ही सब कुछ है।)
- 2- कामोन्मादी मनोविज्ञान (इन्द्रियों में ही सुख है।)
- 3- भोगोन्मादी समाजशास्त्र (सुविधा ही जीवनशैली है।)

स्वयं को शरीर, सामान को सम्मान, सुविधा को सुख मॉनकर जीते है इसी लिए दूसरे मानव, पशु, पेड़-पौधों और पदार्थ का शोषण किया।

शिक्षा मे क्या करना होगा?

कामना को इच्छा में, इच्छा को तीव्र इच्छा में, तीव्र इच्छा को संकल्प में, संकल्प को संभावना में, संभावना को सुगमता में, सुगमता को उपलब्धि में, उपलब्धि को अधिकार में, अधिकार को स्वतंत्रता में, स्वतंत्रता को स्वत्व में, स्वत्व को व्यवहार एवं उत्पादन में चरितार्थ करना ही शिक्षा एवं व्यवस्था का आदयान्त कार्यक्रम और उपलब्धि है।

गलती हुई कहाँ ?

गलती वहां हुई जहां इंसान तैयार होते है यानि शिक्षा में जहां सब्जेक्ट केवल एग्ज़ाम में मार्क्स पाने भर के लिए रह गए बजाय जीवन को उत्साहपूर्वक जीने के |

शिक्षा में शामिल होने चाहिए थे -

- 1.स्वयं का जानना
- 2.संबंधों को जानना और मूल्यांकन करते हुए निर्वाह करना | 3.वर्तमान के अभ्युदय में भागीदारी |

स्वयं को न समझने का खामियाजा (वर्तमान स्थिति) Crime

Failure of Education

Family Warming To Global Warming





निवारण मैं और शरीर की आवश्यकता को समझना

शिक्षा में करने योग्य कार्य

स्वयं की पहचान

रवन का बहुवा ।		
मानव	मैं जीवन/(j/self)।	सह अस्तित्व में (coexistence) शरीर(body)
आवश्यकता	निरंतर सुख , सम्मान	सुविधा
	(happiness, respect)	(physical facilities)
काल में	निरंतर	सामयिक
	(continuous)	(temporary)
मात्रा में	गुणात्मक	मात्रात्मक
	(qualitative)	(quantitative)
पूर्ति के लिए (fulfilled by)	सही समक्ष /भाव (Right understanding/ feelings)	भौतिक रासायनिक वस्तु (physic- chemical thing)
क्रिया	इच्छा, विचार, आशा(desire, thought, respect) निरंतर(continuous) जानना, मानना, पहचान, निर्वाह करना(knowing, assuming, recognition, fulfillment)	खाना चलाना(eating, walking) सामयिक(temporary) पहचान, निर्वाह करना (recognition, fulfillment)
अवस्था	चैतन्य (conscious)	जड़ (material)

संबंधों की पहचान व निर्वाह



वर्तमान के अभ्युदय में भागीदारी

" आवश्यकता है स्वयं को समझने के लिए, स्वयं मे डूब जाने की "

मानना नहीं - जाँचना हैं :

जाँचने की विधि - ।

परीक्षण

1. निरीक्षण - स्वयं में

2. परीक्षण - दूसरों में

3. सर्वेक्षण - सब में

समझने के आधार पर

जाँचने की विधि - ॥

1. स्वयं में तृप्ति
2. उभय तृप्ति
3. परिवार में समृद्धि
4. प्रकृति में संतुलन
5. सार्वभौम पर

सर्वमान्य हो

जीने के आधार पर

YOUR COMPETITOR

YOU ARE YOUR OWN **COMPETITOR. THIS** REMOVES BULLY, STRESS, NEGATIVITY, ANXIETY ETC.



ना मै मिट्टी हूँ, ना मैं पानी हूँ, ना मैं आकाश हूँ, ना मैं धरती का कण हूँ, ना ही आपके द्वारा देखी जाने वाली वस्तु हूँ, मैं सिर्फ और सिर्फ चैतन्य हूँ। भारतीय दर्शन

प्रत्येक मानव स्वयं की पहचान के पश्चात ही नर से नारायण की यात्रा पूरी कर सकता है।

किसी बिना कोड़ी के इंसान के पीछे भागने से लाख गुना अच्छा है अपने लक्ष्य और सपने के पीछे भागो

MUNI RESEARCH & DEVELOPMENT DIVISION